IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

21 वीं शताब्दी के साहित्य में मानवता का उत्थान और पतन
(मनीषा कुलश्रेष्ठ के उपन्यास साहित्य के विशेष संदर्भ में)

श्रीमती नमिता स्वाइँ
विभागीय मुख्य
स्नातकोत्तर हिन्दी भाषा तथा साहित्य विभाग
सरकारी स्वयंशासित महाविद्यालय, राऊरकेला
swainnamita33@gmail.com

शोध सार - साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है।प्रत्येक कालखंड में पाए जाने वाले साहित्य उस कालखंड के युगानुरूप साहित्यिक अभिव्यक्ति हुआ करते हैं।युग परिवर्तन के साथ-साथ समाज में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन आते हैं।साहित्य में इन परिवर्तनों में निहित उत्थान एवं पतन के तत्वों का विश्लेषण-विवेचन होता है।

21 वीं सदी के विश्व में विभिन्न क्षेत्रों में वैप्लविक परिवर्तन आए हैं।वैश्विक अर्थव्यवस्था और तीसरी दुनिया की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति, आतंकवाद के बढ़ते कदम,विभिन्न देशों में गृहयुद्ध एवं राजनीतिक अस्थिरता,कोविड महामारी जैसे वैश्विक स्वास्थ्य संकट के साथ साथ सूचना क्रांति, विज्ञान, प्रयुक्ति विद्या तथा महकाश गवेषणा के क्षेत्र में अपूर्व सफलता आदि इस सदी को विशिष्ट बनाते हैं।

वैश्विक परिदृश्य पर भारत का बढ़ता हुआ प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में अनुभूत है।विश्व की तेजी से बढ़ती अर्थ व्यवस्था,परमाणु शक्ति सम्पन्न, वृहद गणतांत्रिक राष्ट्र का साहित्य समकालीन युग जीवन का सार्थक प्रतिफलन है।21 वीं सदी का हिन्दी साहित्य समकालीन प्रोद्योगिकी एवं वैश्विक चुनौतियों को संबोधित है।इस दौरान हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में विविध विमर्श जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, कृषक विमर्श, वृद्ध विमर्श, छात्र विमर्श, पुरुष विमर्श,मजदूर विमर्श,अल्पसंख्यक विमर्श आदि का उन्नयन हुआ।पारंपरिक कथा के बदले साहित्य में लैंगिक वैषम्य, सांस्कृतिक वैविध्य, पुरातन रूढ़ियों को चुनौती भूमंडलीकरण का दुष्प्रभाव, विस्थापन,मानवाधिकार के मुद्दों का उपस्थापन आदि नवीन कथ्य का समावेश होने लगा है।नई तकनीकी तत्वों से हिन्दी साहित्य ने अपना समायोजन कर लिया है।कथ्य में नवीनता के साथ साथ संरचना एवं लेखन प्रणाली में भी परिवर्तन आया है।गद्य साहित्य में अनेकानेक नयी विधाओं का प्रयोग होने लगा है।नारी लेखन में विस्तार 21 वीं सदी के हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सबसे बड़ी उपलब्धि प्रतीत होती है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ 21 वीं सदी की सतत जागरूक एवं प्रसिद्ध कथा लेखिका हैं।उनका उपन्यास साहित्य विषय वैविध्य से समृद्ध है।संख्या में सीमित उनके उपन्यास समकालीन युग जीवन की यथार्थता को प्रकट करते हैं।किसी निर्दिष्ट वाद या विचारधारा के बदले उनके साहित्य में मानववाद का समावेश पाया जाता है।समकालीन युग जीवन के समस्त उत्थान एवं पतन के तत्व उनके साहित्य में प्रतिबिंबित हैं।उनके उपन्यास साहित्य में मानवीय मूल्यबोधों की स्थापना के साथ सामाजिक पतन के तत्वों का व्याख्या व विश्लेषण मिलते है।खामियों को उजागर करके उनके समाधान का दिशा निर्देश भी वे करते हैं।

बीज शब्द -वैश्विक परिदृश्य, साहित्य, मानवता, उत्थान, पतन,मानवीय मूल्यबोध, विश्लेषण

प्रस्तावना - ग्रीगोरियन पंजिका के अनुसार 1 जनवरी 2001 से 31 दिसंबर 2100 तक के समय सीमा को 21 वीं सदी का नाम दिया गया है।यह ऍनो डोमिनी अर्थात सामान्य युग की वर्तमान सदी के नाम से भी जाना जाता है।यह सदी अपने पूर्ववर्ती सदियों से भिन्न एवं विशिष्ट है।राजनीतिक दृष्टि से विश्व के कई देशों में आतंकवाद के बढ़ते पदचाप के मध्य राजनीतिक अस्थिरता, गृहयुद्ध एवं शांति स्थापन के प्रयास का समय रहा है।वैश्विक आर्थिक मंदी के साथ साथ तीसरी दुनिया के उपभोक्तावाद और निजी उद्यम में वृद्धि का समय है।पृथ्वी के तमाम देशों में वैश्विक महाशक्ति के रूप में अमरीका का वर्चस्व कायम है।कोविड महामारी, समुद्र के बढ़ते जल स्तर, पर्यावरण प्रदूषण आदि समस्या विश्व के सम्मुख चुनौती बन खड़े हैं।साथ ही ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास, कृत्रिम बुद्धिमता, मानव जीनोम परियोजना, डी.एन्.ए. अनुक्रमण एवं अन्तरीक्ष अनुसंधान आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि भी मानवता को प्राप्त

है।

21 वीं सदी में हमारा देश सम्पूर्ण विश्व में सामाजिक एवं आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहाहै।विज्ञान, शिक्षा, प्रोद्योगिकी आदि समस्त क्षेत्रों में यह निरंतर विकास कर रहा है।भारतीय साहित्य विशेष रूप से हिन्दी साहित्य में समसामयिक युग जीवन के समस्त उत्थान एवं पतन दोनों के सार्थक चित्रण मिलते हैं।

21 वीं सदी के प्रसिद्ध महिला कथाकारों में मनीषा कुलश्रेष्ठ का विशिष्ट स्थान है।कथ्य की विविधता उनके लेखन की विशेषता है।अभी तक उनके सात कहानी संग्रह, सात उपन्यास और दो यात्रा वृतान्त प्रकाशित हो चुके हैं।उनके साहित्य में समकालीन युग जीवन के पतन और उत्थान के सभी तत्व उपलब्ध हैं।इसका विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है।

विस्थापन का दर्द:-उपन्यास शिगाफ़ कश्मीर हिन्दू पंडितों के विस्थापन की करूण कथा के ऊपर आधारित है।यह प्रसंग प्रत्येक भारतीय मन मस्तिष्क को विचलित कर देता है।परंतु इसके समाधान का कोई उपाय नजर नहीं आता है।"विस्थापन का दर्द महज एक सांस्कृतिक, सामाजिक विरासत से कट जाने का दर्द नहीं है बल्कि अपनी खुली जड़ें लिए भटकने और कहीं जम न पाने की भीषण विवशता है"। (1) नायिका अमिता कश्मीर से दिल्ली और वहाँ से स्पेन चली जाती है परंतु किसी भी जगह पर अपना सामंजस्य बिठा नहीं सकती।उसका व्यक्तित्व पराएपन से आक्रांत रहता है।हर शुक्रवार और शनिवार अमिता और उसकी दोस्त फियोना मटरगश्ती करते हैं।गलियों में बने ओपन एयर रेश्टुराँट में खाना खाते हैं।जीने के सभी सुख सुविधाएं उसके पास होने के बावजूद वह कश्मीर में बीते हुए बचपन के दिनों को याद करती है।अपनी मातृभूमि से विस्थापित होने के दुःख से वह दुखी रहती है।इंटरनेट पर कश्मीरियों को ढूँढती रहती है एवं विस्थापन का दर्द बाँटती रहती है। मल्लिका उपन्यास में बाल विधवा मल्लिका को अपने घर से दूर बंगाल से आकर वाराणसी में रहना पड़ता है।अपना परिवार और परिचित दुनिया से बाहर अकेले रहने की त्रासदी उसे झेलनी पड़ती है।

गरीबी :- अर्थ सर्वस्व दुनिया में आर्थिक अस्वच्छलता के कारण मनुष्य जीवन के सुख शांति कोसों दूर चले जाते हैं।उपन्यास शाल भंजिका में अपने परिवार को दारिद्र्य के पंजे से निकालने के लिए कला संस्कृति को समर्पित परिवार की बेटियाँ प्राइवेट पार्टियों में नाचने को विवश हो जाती हैं। पद्मा को बहुत सारे खतरों से गुजर कर अपने घर की रोटी चलानी होती थी।लोगों के अश्लील संकेतों का सामना करना पड़ता था।"कल् घर आ जाओ रिकॉर्डिंग के बाद डिस्कस कर लेते हैं।बाद में पता चलता वह कमीना रँडुआ है और अकेला रहता है,लेकिन तभी याद आता बाऊजी की एंजियोग्राफी होनी है।ऐसे में मैं नीलू को साथ लेकर जाती थी,अकेले नहीं।ऐसे लोगों के डबल-मीनिंग चुटकुलों पर जबरन हँसना-मुस्कुराना पड़ता था"।(2) कश्मीर में आतंकवाद के चलते आम आदमी गरीबी के दंश सहने को मजबूर हो जाता है।मल्लिका उपन्यास में बनारस के मठों में रहने वाली विधवाएं भिक्षा मांगने को विवश दिखाए गए हैं।

आतंकवाद के दुष्परिणाम :-21 वीं सदी में आतंकवाद प्रत्येक देश के लिए भयानक समस्या बन खड़ा है।शिक्षित युवाओं को प्रलोभित कर मानवता के हत्यारे समाज को विनाश के रास्ते आगे बढ़ा लेते हैं।लड़कों को जबरदस्ती कैंप में रख कर आतंकवादी बनाया जाता है।न जाने कितने नौजवान अपनी जिंदगी और सपनों से वंचित रह जाते हैं।मृत वाहिद के जुराबों में रखे हुए कुचले खत में उसने लिखा था -"कुछ करके मुझे बुलवा लो।पहले तो अब्बू कुछ कर भी पाते.. अब तो मैं बॉर्डर की इस तरफ हूँ।मेरी सारी उम्मीदें टूट गयी हैं।मन करता है, खुदकुशी कर लूँ या भागूँ और इनके हाथों मार जाऊं"। (3) आतंकवाद के कारण विस्थापन, स्त्रियों के प्रति अत्याचार, शोषण आदि बढ़ते जा रहे हैं।कश्मीरी लड़कियों को मानव बम में तब्दील किए जा रहे हैं।पृथ्वी का स्वर्ग कही जाने वाली कश्मीर में दहशतगर्द आतंकी मौत का तांडव नाच रहे हैं।

पारिवारिक विघटन:-21 वीं सदी में वैश्वीकरण नितांत अपरिहार्य हो गया है।इसके चलते शहरीकरण एवं विस्थापन की मात्रा बढ़ रही है।पारिवारिक ढांचे में परिवर्तन हो रहा है।एकल परिवार में माता-पिता दोनों के कामकाजी होने से बच्चों की परवरिश पर असर पड रहा है।व्यक्ति अकेलेपन एवं अवसाद का शिकार होते जा रहे हैं।शहरों के बच्चे परिवार की कमी स्मार्ट फोन, भिडियो गेम और महंगे खिलौने से पूरी करने को मजबूर हैं।ये बच्चे तरह तरह के मनोरोगों का शिकार होते हैं।"मनोचिकित्सीय शोधों के अनुसार शहरीकरण स्किजोफ्रेनिया के होने की दर को बढ़ाता है और पारिवारिक ढाँचे में टूट रोग से मुक्ति में बाधा पहुँचाती है।ध्यातव्य है कि गुलनाज़ पिछले ढाई दशकों में बने ग्लोबल गाँव की बेटी है"।(4)तमाम सुख सुविधाओं के बावजूद गुलनाज़ मानसिक बीमारी ग्रस्त हो जाती है और आत्महत्या कर लेती है।

स्त्रियों का शोषण :-आदिम काल से ही स्त्रियों का जीवन संघर्षमय रहा है।दुनिया की आधी आबादी होते हुए भी पारंपरिक

पितृसत्तात्मक समाज में वह नित्य विभिन्न प्रकार के शोषण का शिकार होती आई है।मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन के संघर्षों के पीछे छुपी हुई हालातों, षड्यंत्रों एवं स्वार्थ पूर्ण कृत्यों को उजागर कर वर्तमान को चेतावनी दी है।सोफिया को लड़की होने के कारण प्रेम करने का दंड भुगतने पड़ते हैं।अपने आँखों के सामने अपने पति की मौत देखकर वह जींदा लाश बन जाती है।आश्रय देनेवाला अधेड़ के द्वारा किशोरी अमिता का शारीरिक शोषण होता है।बाल विधवा मल्लिका को अपनी रक्षा के लिए घर छोड़कर काशी आना पड़ता है।

विधवाओं की दुर्दशा :- आधुनिक शिक्षा के प्रसार के कारण देश में बाल विवाह, सती दाह जैसे कुप्रथा बंद हो चले हैं।परंतु आज भी विधवा स्त्रियों की दुर्दशा समाप्त नहीं हुई है।अपने भरण पोषण के हेतु दूसरों पर निर्भर होने के कारण उसे प्रताड़ना का शिकार होना पड़ रहा है।मल्लिका उपन्यास में तत्कालीन विधवाओं की दुर्दशा का चित्र कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है-"परंतु दरवाजा खोलकर अंदर जाने पर एक दूसरी ही दुनिया नजर आती थी।यहाँ राधा-दामोदर का मंदिर था, इसके अलावा अनेक कालिख पुती कोठरियाँ भी थी।कबूतर के दड़बे के समान।जिनमें से मटमैली सफ़ेद धोतियाँ पहने, मलिन विधवाएँ अपने साँझ के काज निपटा रही थीं। भोजन,बासन,माला फेरना"।(5)ये विधवाए बड़ी संख्या में बंगाल और उड़ीशा से आकर काशी के कलेवर में समा जाया करती थी।पंडे,पुजारी और पुरोहितों के काम वासना को प्रशमित करने के लिए वे अभिशप्त हुआ करती थीं।वाल विधवा मल्लिका अपनी इज्जत बचाने के लिए काशी आ तो जाती है परंतु अपने देह पर जोंक की भांति चिपकी लोगों की लोलुप और संकीर्ण दृष्टियों से विचलित रहा करती थी।

धार्मिक वैमनस्य व ऑनर किलिंग की समस्या:-इक्कीसवीं सदी का भारत वर्ष संसार का वृहत गणतंत्र है।भारतीय संविधान में व्यक्ति स्वतंत्रता का अधिकार सम्मिलित है।यह प्रत्येक नागरिक को स्वतंत्रता, गरिमा एवं विकाश के लिए आवश्यक अधिकार प्रदान करता है।21वीं सदी का मानव चंद्र पृष्ठ पर अपनी सभ्यता स्थापित करने के लिए प्रयासरत है।जबकि धार्मिक विद्वेष के कारण धरती को बर्बाद करने पर तुला हुआ है।मुसलमान सोफिया हिन्दू लड़के शैलेश से प्रेम विवाह कर लेती है। लेकिन सोफिया के असहिष्णु रिश्तेदारों द्वारा उसकी आँखों के सामने ही शैलेश की बड़ी बेरहमी से हत्या करवा दिया जाता है।"परिवार से समाज तक,शैतान की खोह में चले जाने वालों की पहचान करते हुए यह उपन्यास प्रेम की निर्मलता और समाज की कठोरता के बीच एक महाप्रश्न खड़ा करता है कि इंसान वैसी ही दुनिया कबूल कर बैठने पर विवश क्यों हो जाता है,जैसी दूसरे लोग उसे बनाना चाहते हैं।मज़हब के फ़र्क की सज़ा प्रेमी को आखिर कब तक मिलती रहेगी .."?(6)

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या:-वर्तमान सदी में सर्वाधिक ज्वलंत समस्या के रूप में पर्यावरण के असंतुलन हमारे सामने उपस्थित है।आधुनिक भौतिकवादी सभ्यता के विकास से प्राकृतिक पर्यावरण का विनाश हो रहा है।इंसानों की भोगवादी प्रवृत्ति के कारण प्रकृति का दोहन हो रहा है।विकास के नाम पर जंगल की कटाई, खनिज संपदाओं की अनियंत्रित खुदाई से जल,जंगल,जमीन,हवा सब नष्ट भ्रष्ट हो रहे हैं।मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपने साहित्य में पर्यावरणीय मुद्दे को बेहद गंभीरता से उठाया है।आँकड़े के मुताबिक प्रत्येक वर्ष प्रायः 130 लाख वर्ग हेक्टर जंगल नष्ट हो कर खेत,चारागाह या कारखाने में तब्दील हो रहे हैं।जंगली जानवर विलुप्ति के कगार पर आ चुके हैं।इस संदर्भ में मनीषा कुलश्रेष्ठ का उपन्यास 'त्रिमाया' बहुत महत्वपूर्ण है।इस उपन्यास में जंगल क्षय,हाथी-मनुष्य की लड़ाई,मानवीय हस्तक्षेप से विपर्यस्त जीवजंतु आदि का सार्थक चित्र उपस्थापन किया है।हथिनी माया के अनुसार पहाड़ियों से घिरा जलदापारा का जंगल उन सब के लिए उपयुक्त था।इसमें घूमने के लिए पर्याप्त जगह और रास्ते थे।लेकिन धीरे धीरे जंगल जलाकर चाय बागान बढ़ाया गया। इससे उन सबके पुराने रास्तों में अवरोध आ गए।"दोनों नदियों के मुहाने पर जब एक बाँध बनाया गया तो उसके बाद हमारा यह विशाल घर सिकुड़ने लगा।बड़ा जंगल का हिस्सा खो गया और उसमें हमारे रास्ते ही गुम हो गए "। (7)बाँध बन जाने पर जल प्रवाह रुके,घास और झाड़ियाँ सुख गए।मनुष्य की अंतहीन प्यास के कारण जंगल में बार-बार आग लगने लगे।असंख्य जीव जन्तु जल कर मरे।जंगल में मनुष्यों की भीड़ बढ़ने के कारण हाथी झुंड पलायन कर जाते हैं तनाव के कारण प्रजनन नहीं करते या मिलन के अवसर कम हो जाते हैं।भोजन की तलाश में गाँव और खेतों की ओर जाने पर बिजली की बाड से बिजली के झटके से मारते और आग के गोले फैंकते।इस प्रकार जीवन और जंगल के विशाल लैंडस्केप में मजबूत खंभे की भांति रहने वाले हमारे सौम्य दिग्गजों की संख्या धीरे-धीरे घटती जा रही हैं।

21 वीं सदी के साहित्य में समाज के नव निर्माण के स्वर भी देखने के लिए मिलते हैं।साहित्य में मानवता के उत्थान के

तत्वों को इन बिंदुओं से आँका जा सकता है।

सामाजिक चेतना का विकास और जागरूकता - मनीषा कुलश्रेष्ठ के साहित्य में समाज को प्रेरित और दिग्दर्शन देने की अपार क्षमता निहित है।उनमें संस्कार और जीवन मूल्यों की स्थापना है।अपने उपन्यासों में समाज की सडी गली वर्जनाओं को उखाड़ फैंकने का आह्वान किया है।'शिगाफ़' में धार्मिक कट्टरता और विस्थापन की समस्या,'मल्लिका' में बाल विवाह एवं विधवा समस्या, 'सोफिया' में धार्मिक वैमनस्य और ऑनर किलिंग की समस्या, 'स्वप्नपाश' में पारिवारिक विघटन एवं मानसिक स्वास्थ्य समस्या, 'शाल भंजिका' में आर्थिक दुरवस्था और स्त्री समस्या और 'त्रिमाया' में पर्यावरणीय समस्या पर सवाल उठाया है।अपने उपन्यासों में इन समस्याओं का दुष्परिणामों की आलोचना की है।इनके समाधान के उपाय भी सुझाए हैं।

विविध विमर्शों का उत्थान- मनीषा कुलश्रेष्ठ का साहित्य विषय वैविध्य से समृद्ध है।उनके नारी संबंधी दृष्टिकोण पाश्चात्य नारी विमर्श से सर्वदा भिन्न एवं नवीन है।इसके लिए उन्होंने भारतीय पुराणों के पंचकन्या आधार लिया है।उनके साहित्य में वर्तमान जन जीवन को चित्रण मिला है।स्त्री, दलित, विस्थापित हिन्दू पंडित, विद्यार्थी, वाल विधवा, युवा, साधारण कृषक, यहाँ तक की जंगल में रहने वाले हाथी, पेड़ पौधों की मुखर अभिव्यक्ति उनके उपन्यासों में मिलती है।

आधुनिक तकनीकियों का सकारात्मक उपयोग - इंटरनेट एवं सोशल मीडिया आदि के कारण ज्ञान,मनोरंजन एवं संवाद पृथ्वी के कोने कोने तक पहुँच रहे हैं।भौगोलिक दूरी प्रायः खत्म हो चुकी है।'शिगाफ़' की अमिता अपने मन में चल रहे उथल-पुथल को ब्लॉग के माध्यम से सबके पास पहुँचाती है।हाथियों में ट्रैकर लगाकर उनकी गतिविधि एवं मनोभावों को जानने की कोशिश 'त्रिमाया' में मिलती है। मनीषा कुलश्रेष्ठ के साहित्य में तकनीकी का प्रयोग मानव तथा विश्व के मंगल हेतु करने का आग्रह देखने को मिलता है।

स्त्री सशक्तिकरण -मनीषा कुलश्रेष्ठ के उपन्यासों में स्त्री सशक्तिकरण के प्रबल स्वर सुनाई पड़ते है।उनके उपन्यास स्त्रियों को समाज, राजनीति एवं रोजगार के क्षेत्र में पुरुषों के बराबर अवसर एवं अधिकार देने के पक्षधर हैं।उनमें शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के साथ समान वेतन और शारीरिक उत्पीड़न से सुरक्षा एवं राजनीति में प्रतिनिधित्व आदि कई पहलुओं का समावेश देखने क मिलते हैं।बाल विधवा मल्लिका एवं कश्मीर विस्थापित अमिता को साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करती हुई चित्रण किया गया है।मानसिक बीमारी से जूझती गुलनाज़ चित्र कला,पद्मा,मायम्मा नृत्यकला के क्षेत्र में कृतित्व अर्जन करती है।स्त्रियाँ अपने बुलंद हौसलों से सफलता के ऊंचे आसमान को छूती हुई दिखाए गए हैं।हाथी, केरल के नायर संप्रदाय एवं मिजोरम के खासी जनजातियों में पाए जानेवाला मातृवंशीय परिवार का वर्णन किया है।संकट की घड़ियों में अथक मेहनत एवं असीम धैर्य और निष्ठा का परिचय देनेवाली स्त्री जाती का वर्चस्व कायम किया है।वर्तमान के अशांत, युद्ध की छाया में रहने वाला मानव समाज मातृवंशीय पारिवारिक व्यवस्था को अपनाकर धरती को सुख शांति पूर्ण बनाने के लिए वे आशा व्यक्त किए हैं।

पर्यावरण सुरक्षा हेतु जागरूकता- मनीषा कुलश्रेष्ठ अपने उपन्यासों में प्राकृतिक पर्यावरण का मनोहारी चित्र प्रस्तुत किए हैं।उनके लेखन में जंगल का हरापन मिलता है।त्रिमाया में जंगल की गोद में स्वच्छंद,निर्बाध रहने वाले जानवरों का जीवन का वर्णन है।मनुष्यों के द्वारा प्रकृति का अविचारित दोहन और उसके दुष्परिणाम है।समाज को जंगल में ही मानवता का मंगल निहित है संदेश दिया है।

इस प्रकार मनीषा कुलश्रेष्ठ के उपन्यासों में 21 वीं सदी के व्यक्ति एवं समाज के उत्थान एवं पतन के समस्त पक्षों का उद्घाटन सशक्त रूप से हुआ है।

सन्दर्भ सूचि

1. मिश्र डॉ अरुण कुमार - हिन्दी कथा साहित्य में मनीषा कुलश्रेष्ठ, प्रथम संस्करण-2022,पृष्ठ संख्या -101, ऋशिकुल प्रकाशन, प्रयागराज, मूल्य-400 रुपये
2. कुलश्रेष्ठ मनीषा-शाल भंजिका,प्रथम संस्करण,2022,पृष्ठ संख्या-90,सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली-110002,मूल्य-250 रुपये
3. कुलश्रेष्ठ मनीषा-शिगाफ़,दूसरा संस्करण,2022, पृष्ठ संख्या-117,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002,मूल्य-299 रुपये
4. कुलश्रेष्ठ मनीषा-स्वप्नपाश,चौथा संस्करण,2020,कवर पृष्ठ,किताबघर प्रकाशन,नई दिल्ली-110002,मूल्य-240 रुपये
5. कुलश्रेष्ठ मनीषा-मल्लिका,दूसरा संस्करण,2019,पृष्ठ संख्या-106,राजपाल एंड सन्ज़,दिल्ली-110006,मूल्य-235 रुपये
6. कुलश्रेष्ठ मनीषा-सोफ़िया,संस्करण-2021, कवर पृष्ठ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-110002,मूल्य-250 रुपये
7. कुलश्रेष्ठ मनीषा-त्रिमाया,प्रथम संस्करण,2025, पृष्ठ संख्या-63, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002,मूल्य-595 रुपये